□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□

जनसत्ता 14 सितंबर, 2014: भारत को आत्महत्या की राजधानी का खिताब मिला है। यह हमारे लिए गर्व की नहीं, शर्म की बात है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में सबसे अधिक लोग भारत में आत्महत्या करते हैं। हर चालीस सेकेंड में दुनिया में कोई न कोई व्यक्ति खुद को मौत के हवाले कर देता है और आत्महत्या करने वाले हर तीन में से एक व्यक्ति भारत का होता है। यानी हर दो मिनट में एक भारतीय आत्महत्या कर लेता है। रिपोर्ट के अनुसार दक्षिण-पूर्व एशिया में 2012 में सबसे अधिक आत्महत्या की घटनाएं भारत में हुईं। दुनिया में आत्महत्या से हुई आठ लाख चार हजार मृत्यु में से दो लाख अट्ठावन हजार पचहत्तर मौतें भारत में हुईं। पुरुषों को बहुत बहादुर और हिम्मती कहा जाता है, लेकिन चौंकाने वाली बात है कि भारत में होने वाली आत्महत्या की घटनाओं में सबसे अधिक संख्या पुरुषों की है। एक लाख अट्ठावन हजार अट्ठानबे पुरुषों ने इस अवधि में खुदकुशी की, जबकि महिलाओं की संख्या एक लाख से तेईस कम है। पर महिलाओं की आत्महत्या भी हमारे समाज के लिए चिंता का विषय होना चाहिए।

दक्षिण-पूर्व एशिया में खुदकुशी के लिए लोग ज्यादातर कीटनाशकों का उपयोग करते हैं। श्रीलंका में कीटनाशकों की उपलब्धता मुश्किल बनाने के बाद वहां आत्महत्या की घटनाओं में कमी आई है। क्या इस पर रोक लगा कर हमारे यहां भी आत्महत्या के मामलों को कम किया जा सकता है? दरअसल, हमारे यहां आत्महत्या के अधिकतर मामलों में घरेलू झगड़े बड़ी वजह बनते हैं। यहां तेजाब हो या न हो, अगर घर के लोग ही जीवन में तेजाब घोलने पर उतारू हो जाएं और किसी की भावनाओं की कद्र न करें, कोई पूछने वाला तक न हो, तो संभव है कि आदमी दहशत और निराशा में ऐसे पाप को अपना ले, जिसकी हर धर्म में निंदा की गई है। खासकर महिलाओं के मामले में यही देखा गया है। हमारे समाज में महिलाओं के जीवन को कष्टों से भर देने की प्रवृत्ति आम है।

दिल्ली में, जो कि देश की राजधानी है, हर दिन बलात्कार की चार वारदातें होती हैं। अधिकतर महिलाएं बलात्कार की मानसिक पीड़ा के बाद अपने जीवन का अंत कर लेती हैं, क्योंकि वे अपने साथ हुई किसी ऐसी हरकत के बाद हर पल खुद को मरता देखती हैं। समाज भी ऐसी महिलाओं की मुश्किलों को मानसिक और सामाजिक रूप से दूर करने में विफल रहता है। होता यह है कि ऐसे हालात में दोषी को समाज सिर आंखों पर बिठाता है। ऐसी हरकतें समाज की एक ऐसी छवि पेश करती हैं, जो मर चुका है और जिसमें बलात्कार की शिकार महिला को ही निशाने पर रख लिया जाता है। ऐसे में यह आशंका रहती है कि बलात्कार की शिकार महिला अपने को मौत के हवाले न कर दे। उसकी ऐसी मौत समाज की ही मौत कही जाएगी।

पिछले दिनों बिहार के दरभंगा में एक पच्चीस वर्षीय महिला को पुलिस ने बचाया। दहेज न ला पाने के कारण उसे ससुराल वालों ने तीन साल से शौचालय में बंद कर रखा था। अपनी बेटी से मिलने के सभी प्रयास विफल हो जाने के बाद उसके माता-पिता ने शिकायत की तब पुलिस ने उसे नरक से मुक्ति दिलाई। तीन साल तक बचा-खुचा खाकर शौचालय की अंधेरी दुनिया में बंद रहने वाली यह महिला बाहर निकल कर धूप में आंखें नहीं खोल पा रही थी। जब वह बाहर निकली तो उसकी बेटी भी उसे नहीं पहचान पाई। ऐसा जीवन अगर हमारे समाज में किसी महिला को दिया जाए, तो क्या वह जीने से अधिक मरने की चाह नहीं करेगी। जब अपने ही जान के दुश्मन बन जाएं और हर घड़ी यातना में बीत रही हो, तो आत्महत्या को रोकने के सभी तरीके विफल होते नजर आते हैं। समाज को मिल कर इसके विरुद्ध लड़ना होगा। यह कैसा समाज है कि जहां पड़ोसी तक उस महिला की सहायता नहीं कर पाए। जब उसके माता-पिता ने कई बार मिलना चाहा होगा तब समाज को तो बीच में पड़ कर उनकी मुलाकात बेटी से करानी चाहिए थी। पर शायद यह आज का कड़वा सच है कि जब किसी पर अत्याचार होता है, तो पूरे समाज का मौन समर्थन अत्याचारी के साथ होता है।

वशि्व स्वास्थ्य संगठन की जनिवा में जारी इस रपिोर्ट के अनुसार आत्महत्या से मरने वालों में पंद्रह वर्ष से उनतीस वर्ष के युवा अधकि होते हैं□ यह वह अवस्था है, जसिमें युवाओं में उत्साह का संचार होना चाहि□□ पहा□ों का सीना चीर देने की हम्मित होनी चाहि□□ तूफानों को मो□ देने की भावना दखिनी चाहि□□ जान की बाजी लगाने की तैयारी दखिाई देनी चाहि□, मगर अफसोस कि युवा पी□ी न जाने क्यों हालात से इतना घबरा जाती है कि उसे जीवन से टक्कर लेना मुश्कलि और मौत को गले लगाना आसान नजर आता है□ अगर हमारे समाज में युवा ऐसे सोच के साथ परवरशि पा रहे हैं, तो फरि समाज का भवषि्य अंधेरे में है□ अगर इस समय कुछ नहीं कयिा गया तो हमें तैयार रहना चाहि□ □क डरपोक और कमजोर समाज के लि□, जहां वरिोध की हल्की-सी आहट हमारे युवकों को चूहों की तरह अपने बलिों में घुसा देगी□ वह घबरा कर कसिी भी गलत दशिा में नकिल सकते हैं□ वह चाहे खुद को मार डालना ही क्यों न हो□ इसे काबू में करने की जरूरत है□

अगर हमें समाज से आत्महत्या की प्रवृत्त‍ि को दूर करना है, तो हमें अपने समाज में प्रवेश कर चुकी बुराइयों को दूर करना होगा□ बाजार के हवाले हो चुके इस जीवन में हम □क-दूसरे के कप□ की अधकि सफेदी तक से बेचैन हो जाते हैं□ यह सोच हमें आगे चल कर कु□ं में ले जा□गी□ जसि प्रकार के □क बने-बना□ सांचे में ढले माता-पता अब तैयार हो रहे हैं, वे □क ऐसी दुनयिा में जीते हैं, जहां इंसान की कद्र केवल धन-संपत्त‍ि से होती है□ आपकी योग्यता आपकी लंबी गा□ी पर नरि्भर करती है□ आप कसि ब्रांड के कप□ पहनते हैं, कैसे घर में रहते हैं, कौन-सा मोबाइल उपयोग करते हैं और साल में कतिनी बार कहां-कहां घूमने जाते हैं, यह सब अगर सफलता की दलील होने लगे तो आप समझ सकते हैं कि आज का व्यक्त‍ि कैसे झूठी दुनयिा में जी रहा है□ इसके अलावा इंसान की इंसान से दूरी, समाज में ऊंच-नीच, जात-पांत, शकि्षा, रोजगार और स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ सबको बराबर न मलिना भी कसिी व्यक्त‍ि के आत्मवशि्वास को कमजोर कर सकता है□ हमारे देश में बु□ापे में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, अपनों से दूरी या महंगाई के कारण भी कई बुजुर्ग आत्महत्या का रास्ता अपना लेते हैं□

आत्महत्या की घटना□ं कसिी भी समाज की कमजोरी को दर्शाती हैं□ साबति करती हैं कि लोग □क-दूसरे के साथ नहीं ख□ हैं, जरूरत प□ने पर मदद के बजाय दूसरों का मजाक उ□ाते हैं□ इसलि□ लोगों का अपनी परेशानी को लेकर परस्पर संवाद नहीं हो पाता□ हमें आत्महत्या की घटनाओं को रोकने के लि□ ऐसे सोच से बचना होगा□ सरकार को इस दशिा में काम कर रहे संगठनों के साथ बेहतर तालमेल बनाना होगा□ समाज को □क-दूसरे से अधकि बातचीत करनी होगी□ □क-दूसरे को सुनना भी होगा और नरिाशा के शकिार लोगों का हौसला भी ब□ाना होगा□ मीडयिा को भी इसमें ब□ी भूमकिा नभिानी होगी□ धार्मकि नेताओं को भी आत्महत्या जैसे पाप से लोगों को बचाने का वचन लेना होगा, ताकि लोग आत्मघाती न बन कर उच्च मनोबल और नैतकि बल से भर सकें□ आइ□, कोशशि करें कि हमारा देश आत्महत्या की राजधानी के पदक से मुक्त‍ि पा सके□ इसके लि□ सरकार ही नहीं, हम सब यानी पूरे समाज को □क-दूसरे का समर्थन करना होगा और जरूरत प□ने पर □क-दूसरे की मदद करनी होगी□

फेसबुक पेज को लाइक करने के लि□ क्लकि करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्वटिर पेज पर फॉलो करने के लि□ क्लकि करें- https://twitter.com/Jansatta